जगत् कल्याण हेतु महावीर का संदेश

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय,
राजस्थान

भगवान महावीर का संदेश आचार मूलक है। आगमिक ग्रंथों में आचार के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डाला गया है। आचार के सभी पक्षों पर सर्वांगीण रूप से यहां चिन्तन किया गया है। अहिंसा, संयम और तप को उत्कृष्ट धर्म कहा गया है। जिस प्रकार भ्रमर पुष्पों को बिना म्लान किये रस ग्रहण करता है उसी प्रकार श्रमण भी बिना किसी को कष्ट पहुचाएं आहार ग्रहण करता है। सभी प्रकार के संगो और आसक्ति का त्याग करने वाला ही उत्तम साधु है। प्रायः सभी आगमों में साधु के कर्तव्यों का निर्देश है। अहिंसा धर्म शुद्ध, नित्य और शाश्वत है। अहिंसा धर्म आत्मज्ञ पुरुषों द्वारा प्रतिपादित है। अहिंसाव्रत की अनुपालना में जो बाधाएं हैं, जब तक उनका परिहार नहीं होता, तब तक उसका अनुपालन संभव नहीं है। उसमें प्रथम बाधा है– दृष्ट। दृष्ट का अर्थ है– शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श। जो व्यक्ति इन्द्रिय विषयों में आसक्त है, वह अहिंसा का पालन नहीं कर सकता। इसीलिए अहिंसक को इन्द्रिय विषयों से विरक्त रहना चाहिए। जिसे इस अहिंसा धर्म का ज्ञान नहीं, उसे अन्य तत्त्वों का ज्ञान कहां से होगा। देह के प्रति अनासक्त मनुष्य ही धर्म को जान सकता है।उत्तराध्ययन में कहा गया है–**'सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।'**[1] भगवान् महावीर का उपदेश है कि दुःख हिंसा से उत्पन्न है, इसलिए हिंसा का परित्याग करना चाहिए। आगमों में वर्णित अहिंसा का आचरण करने से श्रमण संसार सागर से मुक्त हो जाता है। **'अहिंसा परमो धर्मः** अहिंसा ही परम धर्म है, कहकर अहिंसा का जयघोष किया गया है। अहिंसा ही आचार का प्रथम सूत्र है। वैदिक ग्रन्थों में मनसा, वाचा और कर्मणा अहिंसा के पालन का निर्देश है। योगदर्शन में महर्षि पतञ्जलि ने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को यम कहा है– **'अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः।**[2]

जैन धर्म निवृत्ति मूलक धर्म है। इस संस्कृति में आचरण की पवित्रता पर जितना अधिक बल दिया गया है, उतना किसी अन्य पर नहीं। आचार के बल पर मानव देवता के समान पूजनीय बन जाता है। भगवान् बुद्ध, भगवान् महावीर, श्रीमदाद्यशंकराचार्य जैसे महान् व्यक्तित्व का नाम आदर के साथ इसीलिए लिया जाता है कि इन्होंने अपने आचारण के द्वारा संसार को एक नयी दिशा दी।

पांच महाव्रत– हिंसाविरति (अहिंसा), सत्य, अदत्तपरिवर्जन (अस्तेय) ब्रह्मचर्य और संगविमुक्ति (अपरिग्रह)–ये पांच महाव्रत हैं–

हिंसाविरदी सच्चं अदत्तपरिवज्जणं च बंभं च।

संगविमुत्ती य तहा महव्वया पंच पण्णत्ता।।[3]

अहिंसा, सत्य, अचौर्य या अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पांच महाव्रतों का पालन मानव को करना चाहिए। क्योंकि ये पांचों सिद्धान्त वीतराग–उपदिष्ट हैं।

1. हिंसाविरति या अहिंसा

जैन धर्म का मूलाधार ही अहिंसा है। हिंसा कभी भी धर्म नहीं हो सकती। इस विराट् विश्व में जितने भी प्राणी हैं, वे चाहे छोटे हों या बड़े हों, पशु हों या मानव हों, सभी जीवित रहना चाहते हैं, कोई भी मरना नहीं चाहता। अहिंसा में सभी प्राणियों के कल्याण की भावना निहित है। प्रश्न व्याकरण में कहा गया त्रस, स्थावर सभी भूतनिकायों का मंगल करने वाली अहिंसा है। मनुष्य हिंसा क्यों करता है? हिंसा का कारण क्या है? इस प्रश्न का उत्तर आचाराङ्ग में दिया गया है। हिंसा का प्रमुख कारण मानव का अज्ञान है। तत्त्व से अनभिज्ञ होने के कारण मनुष्य विषय, कषाय आदि मानसिक दोषों से पीड़ित है। इसलिए वह हिंसात्मक प्रवृत्ति करता है। भगवान् महावीर ने छह जीवनिकायों की प्ररूपणा की है। इनमें 'पृथिव्यप्तजोवायुवनस्पतयस्त्रसाश्च'[4] पृथ्वी, अप, तेजस्, वायु, वनस्पति और त्रस की प्ररूपणा की गयी है। जब तक जीव का ज्ञान नहीं होता, तब तक हिंसा से छुटकारा नहीं मिल सकता।

2 सत्य महाव्रत

जैनागमों मे ंद्वितीय महाव्रत के रूप में सत्य की गणना की गयी है। जैसा हुआ है, वैसा ही कहना सत्य का सामान्य लक्षण है, परन्तु अध्यात्म मार्ग में स्व पर अहिंसा की प्रधानता होने से हित व मित वचन को सत्य कहा जाता है।[5] आचारांग में कहा गया है आत्मदर्शी मुनि सत्य में धृति करे। 'सत्य' पद अनेकार्थी है–सत्, सद्भाव, तत्त्व, तथ्य, सार्वभौमनियम, भूतोद्भावन संयम, काय, भाव और भाषा की ऋजुता तथा अविसंवादन योग, यथार्थवचन, अगर्हितवचन, व्यवहाराश्रित वचन और प्रतिज्ञा ये सत्य के अर्थ हैं।

3 अदत्तपरिवर्जन (अस्तेय) महाव्रत

आगमों में स्तेय और अस्तेय की विस्तार से व्याख्या की गयी है। सामान्यतया स्तेय से तात्पर्य है चोरी और अस्तेय का तात्पर्य है चोरी न करना। जैनागमों में स्तेय और अस्तेय के अनेक रूप बताए हैं। किसी की निन्दा करना, किसी के दोषों को देखना, चुगली करना, अन्य जीवों के प्राणों का अपहरण करना, दूसरे के अधिकार को छीनना, किसी की भावना को ठेस पहुंचाना, किसी के साथ अन्याय करना आदि सभी स्तेय के अन्तर्गत आते हैं। अस्तेय महाव्रत के साधक को इन सभी प्रवृत्तियों से अपने को बचाना होता है। आगमों में स्तेय के लिए 'अदत्तादान' शब्द का प्रयोग हुआ है। बिना दी गयी वस्तु को स्वयं की इच्छा से उठाना, स्वामी की अनुमति के बिना किसी भी वस्तु को ग्रहण करना व उसका उपभोग एवं उपयोग करना अदत्तादान है। इसे ही चोरी कहते हैं। एकमहाव्रत के रूप में जब कोई साधक इस महाव्रत को स्वीकार करके उसका

आचरण करता है तब वह बिना दिए किसी भी वस्तु को ग्रहण नहीं करता।

4 ब्रह्मचर्य महाव्रत

जैनागमों में महाव्रतों से सम्बन्धित ब्रह्मचर्य महाव्रत का विशेष महत्त्व है। ब्रह्मचर्य का अर्थ है–आत्मविद्या या आत्मविद्याश्रित आचरण। ब्रह्मचर्य' शब्द दो शब्दों के योग से बना है–'ब्रह्म' और 'चर्य'। 'ब्रह्म' शब्द के मुख्यतः तीन अर्थ हैं–ब्रह्म=वीर्य, ब्रह्म=आत्मा, ब्रह्म=विद्या। 'चर्य' शब्द के भी तीन अर्थ हैं–'रक्षण, रमण तथा अध्ययन।' इस तरह ब्रह्मचर्य के तीन अर्थ है–वीर्य रक्षण, आत्म–रमण और विद्याध्ययन। केवल वीर्यरक्षा या जननेन्द्रिय विषयक संयम ब्रह्मचर्य का अधूरा अर्थ है। ब्रह्मचर्य का विधेयात्मक रूप तो अपनी आत्मा या परमात्मा की उपासना में लगना है। वीर्यरक्षा करना, योग साधना करना, विद्याध्ययन करना, किसी विशाल ध्येय को सामने रखकर या निश्चित करके तदनुसार आचरण करना–ये सब आत्मोपासना के लिए सहायक ब्रह्मचर्य के विधायक रूप हैं।

5 अपरिग्रह महाव्रत

अपरिग्रह महाव्रत को जानने के लिए परिग्रह को जानना आवश्यक है। परिग्रह का अर्थ है–ममत्व बुद्धि से किसी वस्तु का ग्रहण करना। परिग्रह का व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है–'परिसामस्त्येन ग्रहणं परिग्रहणं, मूर्च्छावशेन परिगृह्यते, आत्मभावेन ममेति बुद्ध्या गृह्यते इति परिग्रहः' किसी वस्तु का समस्त रूप से ग्रहण करना, अथवा मूर्च्छावश जिसे ग्रहण किया जाता है या अपनेपन–मेरेपन के भाव से यह 'मेरी है', इस बुद्धि से जिसे ग्रहण किया जाय, उसे परिग्रह कहते हैं।'' भगवान् महावीर ने मूर्च्छा को ही परिग्रह कहा है–

'मूच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा।'[6]

परिग्रह महाभय का हेतु है। परिग्रही व्यक्ति को आत्मानुभूति नहीं होती। जो परिग्रह में प्रमत्त हैं, वे पदार्थों को पाकर प्रसन्न होते हैं। अपरिग्रही मनुष्य ही सत्य का दर्शन कर सकता है। जो व्यक्ति सांसारिक भोगविलास में लिप्त है उसे सत्य का दर्शन नहीं हो सकता। अपरिग्रही पदार्थों में ममत्व नहीं करता। अपरिग्रह के तत्त्व को प्राप्त कर व्यक्ति अपने जीवनदशा का परिवर्तन कर सकता है। जब तक पदार्थ के प्रति मूर्च्छा का भाव दूर नहीं होता, तब तक हिंसा और असत्य का भाव भी दूर नहीं हो सकता।

पांचों महाव्रत एक दूसरे के पूरक और सहयोगी हैं एक भी व्रत की विराधना करने वाला अन्य की विराधना करता ही है। परिग्रह रखने वाला हिंसा से बच नहीं सकता और हिंसा करने वाला परिग्रह से नहीं बच सकता। इस प्रकार पांच महाव्रतों के विवेचन में श्रमणधर्म के प्राणस्वरूप अहिंसा महाव्रत का प्राधान्य दृष्टिगोचर होता है। इसी की विशुद्धि के लिए सभी आचार विचार का प्रतिपादन हुआ है। श्रमण की प्रत्येक आचार मूलक क्रिया अहिंसा परक होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1 उत्तराध्ययन सूत्र 3/12
2 पातञ्जलयोगसूत्र 2/30
3 मूलाचार – मूलगुणाधिकार, गाथा 2, 3
4 दशवैकालिक – 4/3
5 प्रश्नव्याकरण सूत्र – 6/21
6 दशवैकालिकसूत्र 6/15,